Major Semester - III 2024-2025 DATE - 26/02/18

Bases of Emotions Criteria.

संवेग एक मनोशारीरिक उत्तेजना की दशा है। यह संवेग की परिभाषा से स्पष्ट होता है। अतएव इसके मुख्य तीन आधार हैं। (i) संज्ञानात्मक आधार (ii) शारीरिक आधार (iii) सांस्कृतिक आधार। प्रत्येक आधार के अन्तर्गत कुछ सिद्धान्तों की स्थापना भी की गई है। उन्हीं के अनुसार उनकी व्याख्या हुई है।

(i) संवेगों के संज्ञानात्मक आधार — संवेग व्यक्ति के संज्ञान पर निर्भर करता है। जब प्राणी किसी संवेग पैदा करने वाले उद्दीपक को देखता है तथा आँख से तंत्रिका आवेग पैदा होता है जो संवेदी तंत्रिकाओं के साथ प्रमस्तिष्क के महत्वपूर्ण भाग में जाता है। परिणामस्वरूप उस उद्दीपक का संवेदन तथा प्रत्यक्षण होता है जो संज्ञान कहलाता है। इस संज्ञान के अनुसार ही उद्दीपक सम्बन्धी संवेग महसूस होते हैं। शैक्टर तथा सिंगर ने एक प्रमुख सिद्धान्त प्रतिपादित किया है जिसे द्विकारक सिद्धान्त के नाम से जाना जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार संवेग के दो कारक हैं — शारीरिक उत्तेजना और संज्ञानात्मक लेबल। जब कोई प्राणी किसी बाहरी उद्दीपक के प्रति उद्वेलित होता है, जब उस उद्वेलन का आभास संवेग की अनुभूति पैदा करता है। तत्पश्चात प्राणी बाह्य वातावरण का अवलोकन करता है, जब अपने शारीरिक उद्वेलन के कारण का नामकरण करता है। इस सिद्धान्त के अनुसार शारीरिक उद्वेलन के कारण का नामकरण संज्ञान होता है। जैसे — जब प्राणी किसी नागिन देखकर चकित होता है तो उसकी शारीरिक उद्वेलन की उत्तेजना का बोध होता है। तथा खुशी की मानसिक अनुभूति का तत्पश्चात इस उत्तेजना परिस्थिति का अवलोकन करते हैं।

जिसमें वह व्यक्ति द्वारा सम्पूर्ण उपस्थित होती है। जिसमें व्यक्ति की संवेगात्मक स्थिति में देखते समय वह एक तरह किसी प्रकार के जीवन का सामना करती है। इस प्रकार संवेग के सम्बन्ध में दो बातें स्पष्ट होती हैं। पहली बाहरी उद्दीपक का प्रत्यक्ष या संज्ञान संवेग उत्पन्न करता है, तथा दूसरी बाह्य परिस्थिति का संज्ञान उत्पन्न संवेग की व्याख्या करती है।

(ii) संवेगों का शारीरिक आधार - भावनाओं का शारीरिक स्थिति पर मुख्य प्रभाव पड़ता है। साथ ही शारीरिक परिवर्तन का भी हमारी भावनाओं पर प्रभाव पड़ता है। जैसे भय होने नींद नहीं आती है। भय हमारे पाचन तंत्र को प्रभावित कर सकती है। तथा अत्यधिक भय से हृदय गति को प्रभावित करता है और मृत्यु का कारण बनता है।

(iii) संवेगों के सांस्कृतिक आधार - संवेगों पर कुछ शोध यह दर्शाते हैं कि संवेग की उत्पत्ति तथा अभिव्यक्ति संस्कृति पर भी निर्भर करती है। भिन्न संस्कृति के अन्तर्गत समाज की पूर्ति भी होती है तथा सपेरा जाति बचपन से सांपों के साथ रहते और खेलते हैं वहीं उन्हें सांपों से डर नहीं लगता, दूसरी ओर भिन्न संस्कृति में बच्चों को यह बताया जाता है कि सांप खतरनाक जहरीले होते हैं तथा उनके काटने से प्राणी की मृत्यु तक हो जाती है। अतः सांप लोगों के लिए डर पैदा करने वाला उद्दीपक बन जाता है। कहीं-कहीं यह भी दर्शाता है कि संवेगों की अभिव्यक्तियों तथा मान्यताओं भी होती है। जिसके द्वारा वह संस्कृतिजन्य होती है। भिन्न संस्कृति के अन्तर्गत कुछ संवेगात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित किया जाता है।

PKS 18/04/2024